17 दिसम्बर 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 15
दिसम्बर(द्वितीय), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

मुमुक्षु समाज के आधार स्तम्भ....

श्री पवनजी जैन अलीगढ़ नहीं रहे....

अलीगढ़ शहर की प्रख्यात शख्सियत, पूज्य गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त, मंगलायतन व चिदायतन के स्वप्नदृष्टा, कर्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी, ऊर्जास्त्रोत, कुशल प्रबंधक, दूरदृष्टा, जिनशासन के कुशल प्रभावक व आराधक, आदर्श कर्मयोगी, वात्सल्य, गंभीरता आदि अनेक गुणों से युक्त श्री पवनजी जैन का गुरुवार 02 दिसम्बर को 70 वर्ष की आयु में स्वास्थ्य खराब होने के कारण देहान्त हो गया।

उन्होंने शांत भावों से इस संसार को छोड़कर परलोक गमन किया। इस अपूरणीय क्षति ने सभी को झकझोर कर रख दिया है। उनका अंतिम संस्कार विलम्ब न करते हुए गुरुवार की दोपहर में ही कर दिया गया।

लम्बे समय के बाद मुमुक्षु समाज में....

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

सिंगोली-नीमच (म.प्र.) : राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र बिजोलिया पारसनाथ के समीप सिंगोली नगर की वसुंधरा पर आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजीस्वामी के मंगल प्रभावना योग में स्थापित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, श्री कुन्दकुन्द कहान धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट एवं दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल सिंगोली के तत्त्वावधान में दिनांक 03 से 08 दिसम्बर 2021 तक श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

प्रतिष्ठा महोत्सव में आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों एवं युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के पंचकल्याणक सम्बन्धी प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोषी हिम्मतनगर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजोलिया एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

सम्पूर्ण पंचकल्याणक बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित रजनीभाई दोषी हिम्मतनगर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। सह-प्रतिष्ठाचार्य पं. सुबोधजी शास्त्री, डॉ. मनोजजी जबलपुर, पं.नन्हेभैया सागर, पं.सुकुमालजी झांझरी एवं सह-निर्देशक श्री अशोककुमारजी लुहाड़िया व श्री देवेन्द्रजी जैन बिजोलिया थे।

इस भवतापहारी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमान सूरजमलजी-विमलाबाई ने प्राप्त किया। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्रीमान निश्चलजी-प्रीतिजी बघेरवाल एवं कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्रीमान गुलाबचंदजी-विमलाजी हरसोरा रहे।

प्रथम दिन धर्मध्वजारोहण, पंडाल उद्घाटन, वेदी उद्घाटन, मंच उद्घाटन आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। गर्भ कल्याणक के अवसर पर १६ स्वप्न के फल को दिखलाने वाले दृश्य दिखाए गए एवं

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

सम्पादक की कलम से...

स्वाध्याय रसिक आदरणीय पवनजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

मंगलायतन एवं चिदायतन जैसे सुन्दर तीर्थों के स्थापनकर्ता, गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त आदरणीय श्री पवनजी भाईसाहब के देहावसान से मुमुक्षु समाज ने एक बड़े आधार स्तम्भ को खो दिया। वे मुमुक्षु समाज पर आने वाले किसी-भी संकट की घड़ी में सदैव ढाल की तरह खड़े रहते थे।

सरकार/राजनीति के क्षेत्र में उनकी पहुंच किसी से छिपी नहीं है। सन् 2005 में किशनगढ़ में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर अत्यन्त विकट परिस्थिति में आयोजन को निर्विघ्न सफल बनाने हेतु उन्होंने श्री लालकृष्ण आड़वाणी से स्वयं बात कर मुख्यमंत्री व अन्य बड़े-बड़े मंत्रियों तक सम्पूर्ण प्रशासन को सक्रिय करा दिया था। मुमुक्षु समाज के संगठन एवं सुरक्षा के लिए खड़े रहना उनके स्वभाव में ही था। उनकी सदैव यही भावना रहती थी कि गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित/प्रसारित तत्त्वज्ञान जन-जन तक निर्बाध रीति से पहुँचे।

वे एक अच्छे नियोजक व कुशल प्रशासक ही नहीं; उत्तम स्वप्नदृष्टा भी थे। तीर्थधाम मंगलायतन उनका ही खुली आंखों से देखा गया एक स्वप्न था। मंगलायतन में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी आज देश में बड़े-बड़े पदों पर पहुँच रहे हैं, यह उनके स्वप्न का ही परिणाम है।

इस धरातल पर एक जैन यूनिवर्सिटी खोलकर भी उन्होंने एक कीर्तिमान स्थापित किया। हस्तिनापुर में बन रहे निर्माणाधीन चिदायतन के लिए भी उन्होंने ऐसा ही स्वप्न देखा था। आज वे भले ही हमारे बीच में न हों, पर मुझे पूरा विश्वास है कि श्री अजीतप्रसादजी दिल्ली, श्री अजितजी बड़ोदा, भाई स्वप्निलजी आदि सभी मिलकर उस स्वप्न को साकार करेंगे। जो सहयोग मुझसे हो सकेगा, उसके लिये मैं भी हमेशा साथ खड़ा हूँ।

आ. पवनजी भाईसाहब के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे स्वाध्याय के गहरे रसिक थे। दिन में 10-12 घण्टे स्वाध्याय उनकी दैनिकचर्या का अंग था। इसी के परिणाम स्वरूप वर्तमान में बाल ब्र. कल्पनाबेन द्वारा श्री धवला वाचना का नित्य क्रम चल रहा है। तत्त्वज्ञान उनके जीवन में बहुत गहराई से उतरा था। वे सफल उद्योगपति होने के साथ-साथ अच्छे विद्वान भी थे, मंगलायतन के विद्यार्थियों को तो वे बहुत गहराई से अध्ययन कराते ही थे।

(शेष पृष्ठ 5 पर...)

महामंत्री की कलम से...

मुमुक्षु समाज को बड़ी हानि...

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त एवं पण्डित कैलाशचंदजी जैन के सुपुत्र श्री पवनजी जैन बहुत ही आध्यात्मिक रुचि वाले गृहस्थ थे। पूज्य कानजीस्वामी द्वारा प्रतिपादित तत्त्व के प्रचार-प्रसार में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उनके द्वारा निर्मित मंगलायतन संस्था ने देश-विदेश में बहुत नाम कमाया। मंगलायतन तो एक दर्शनीय तीर्थस्थल ही बन गया।

उन्होंने देश में होने वाले पंचकल्याणक आदि बड़े-बड़े कार्यों में तो महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ही है साथ ही विदेश में मुमुक्षु समाज द्वारा सम्पन्न तीनों पंचकल्याणकों (लन्दन, अमेरिका और कनाड़ा) में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि विदेश के तीनों पंचकल्याणकों में उन्होंने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर को भी साथ में रखा। तीनों जगह मुझे आमंत्रित भी किया और प्रतिदिन मेरा व्याख्यान भी कराया।

मंगलायतन में सम्पन्न दोनों पंचकल्याणकों में भी मैं उनके साथ उपस्थित रहा हूँ। उन्होंने पण्डित टोडरमल स्मारक के साथ जुड़े रहकर ही सारे कार्य किए हैं। मंगलायतन तीर्थधाम के निर्माण के समय में भी उन्होंने पण्डित टोडरमल स्मारक की पूर्ण सहमति प्राप्त की। जब यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई तो उन्होंने उसका कोर्स मुझसे ही सुनिश्चित करवाया तथा मंगलायतन यूनिवर्सिटी से मुझे डी-लिट् की उपाधि प्रदान की।

आज से लगभग दो-तीन साल पहले जब किसी व्यक्ति ने उन्हें उनकी मृत्यु की तारीख बताई कि अमुक तारीख को आपका स्वर्गवास हो जाएगा, तभी से उन्होंने इस वीतरागी तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लेने के लिए अनेक विद्वानों को अपने निकट बुलाया। इसी बीच मेरा भी दो-तीन बार उनके निकट जाने का प्रसंग बना। उस समय उनका तत्त्वज्ञान के प्रति असीम प्रेम व आत्मकल्याण की तीव्रतम भावना को निकट से देखा। मैंने उन्हें रहस्यपूर्ण चिट्ठी के आधार से तत्त्व की गहरी बातें बतलाई, आत्मा के अनुभव की प्रक्रिया समझाई, जिसकी उन्होंने बहुत प्रशंसा भी की।

उनके चले जाने से मुमुक्षु समाज को बहुत बड़ी हानि हुई है, जिसकी पूर्ति किसी और से संभव नहीं है।

वे निश्चित तौर पर अच्छी जगह पर गए होंगे और उनका भविष्य भी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में ही व्यतीत होगा। ●

सह–सम्पादक की कलम से...

अनूठे पवनजी

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

मेरी किताब क्या मृत्यु अभिशाप है के मुख्यप्रष्ठ पर मैंने एक पद लिखा है–

अरे मृत्यु के महाखौफ में, मरते – मरते जीवन बीता
अरे कोई पल इस जीवन का, इस सदमे से नहीं था रीता
एक समय की इस मृत्यु ने, लील लिया जीवन का छिन–छिन
अब मुक्त हुआ मैं छोड़ चला जग, है आज मौत का अंतिम दिन

सामान्यत: सामान्यजन की स्थिति ऐसी ही हुआ करती है, पर **पवनजी की स्थिति इसके ठीक विपरीत थी, क्योंकि वे सामान्य न थे।**

यूं तो एक न एक दिन मरना सभी को है और वह दिन कभी–भी आ सकता है, पर सामान्यदशा में हमें ऐसा नहीं लगता है कि हमारे साथ यह किसी भी पल घटित हो सकता है, पर पवनजी के साथ ऐसा न था। विगत लगभग ३० वर्षों से उनके स्वास्थ्य की स्थिति ऐसी थी कि यह अहसास स्वाभाविक ही था कि मेरे साथ कभी भी, कुछ भी हो सकता है पर ऐसे किसी अहसास को उन्होंने अपने ऊपर सवार नहीं होने दिया, सवार तो क्या, उन्होंने ऐसे किसी अहसास को कभी अपने आसपास भी नहीं फटकने दिया। **ऐसी स्थिति में कि जब कोई भी सामान्यजन अपने जीवन की इतिश्री मानकर सिर्फ जीवन के बचे हुए दिन काटने की मनस्थिति में आ जाता है, उन्होंने ऐसा जीवन जिया मानो अब वे जीवन की शुरुवात ही कर रहे हों। नित नई योजनायें, नित नए उपक्रम वह भी छोटे–मोटे नहीं, विशाल–अतिविशाल. छोटा तो वे सोचते ही न थे, छोटा सोचना तो उन्होंने सीखा ही नहीं था।**

तीर्थधाम मंगलायतन के बाद हस्तिनापुर में चिदायतन की परिकल्पना इस बात का जीवंत प्रमाण है कि उन्होंने ठहरना सीखा ही नहीं था। फैक्ट्रियां लगाने की शुरुवात की तो एक के बाद एक उनकी श्रंखला खड़ी करदी। स्कूल खोलने शुरू किये तो ४ बड़े–बड़े स्कूल खडे कर दिए और विश्वविद्यालय तक पहुँच गए और फिर धर्मायतनों का क्रम...।

कहा गया है कि "**जीवन इसप्रकार जीना चाहिए, मानो आज ही जीवन का अन्तिम दिन हो**" तात्पर्य यह कि वह काम सबसे पहले करलो जो हम इस जीवन में हरहाल में करना चाहते हैं। हो न हो, यही सूत्रवाक्य भाईसाहब पवनजी का प्रेरणाश्रोत रहा होगा। जैसे ही उनके स्वास्थ्य की स्थिति बिगडनी शुरू हुई उन्होंने उन योजनाओं पर काम करना शुरू कर दिया जो उन्हें इस जीवन में हरहाल में क्रियान्वित करनी थीं। उनकी **उपरोक्त योजनाओं में उनके मंगलायतन जैसे बड़े–बड़े उपक्रमों के अलावा आत्मकल्याण हेतु स्वाध्याय प्रमुख था, वही सबसे अधिक महत्वपूर्ण था।**

एक महत्वपूर्ण कार्य भाईसाहब ने यह किया कि उच्च लौकिक शिक्षा पारहे छात्रों को धार्मिक संस्कार और आध्यात्मिक शिक्षा मिल सके, इस उद्देश्य से विद्यालय और छात्रावास की स्थापना करके उनके धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था की। सचमुच तो **इस तरह की व्यवस्था समाज के प्रत्येक बालक–बालिका को उपलब्ध होनी चाहिए।** यह उनके पूज्य पिताश्री पण्डित कैलाशचन्दजी से उनके बचपन में मिले संस्कारों का सुपरिणाम ही था कि कुछ समय के भटकाव के बाद अंतत: वे पुन: इसी मार्ग पर आ गये और जैन अध्यात्म के मर्मज्ञ बने। यह सब उन्होंने आत्मकल्याण के लिए तो किया ही, स्वयं शिक्षण करके छात्रों को भी उपकृत किया।

मंगलायतन के माध्यम से देश और विदेशों में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं के आयोजन और जिनवाणी प्रकाशन के क्षेत्र में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। तीर्थधाम मंगलायतन में उनके द्वारा स्थापित धन्य मुनिदशा की अद्भुत झांकियां मुनिधर्म को जीवंत अनुभव करने की सशक्त माध्यम बनीं।

यदि परिवार का सहयोग न मिले तो किसी के लिए कोई महान काम करना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य होता है। भाईसाहब के स्वास्थ्य की विपरीत परिस्थितियों में तो यह लगभव असंभव ही था, पर भाईसाहब ने यह कर दिखाया तो इसके पीछे का पीठवल है आदरणीया भाभीजी श्रीमति आशाजी का चट्टान की तरह उनके पीछे खड़े रहना। अविचल और अडिग, निश्चिन्त और वेपरवाह।

अपने व्यवसायिक साम्राज्य के अतिरिक्त मंगलायतन जैसे उपक्रम और उनके द्वारा संचालित तत्त्वप्रचार की समस्त गतिविधियों को संचालित करने का कार्यभार अब उनके सुपुत्र श्री स्वप्निल जैन के सबल कन्धों पर है और वे इन सभी उपक्रमों के यथावत संचालित करते रहने के लिए दृढप्रतिज्ञ और कृतसंकल्प हैं।

मैं आशा करता हूँ कि यह सब न सिर्फ यथावत चलता रहेगा वरन दिन–प्रतिदिन वृद्धिंगत होगा। इस महान कार्य में सारा समाज तो उनका सहयोगी है ही।

आदरणीय भाईसाहब श्री पवनजी ने गहन स्वाध्याय के द्वारा इस जीवन में निश्चित रूपसे मोक्षमार्ग में अपने कदम आगे बढाए हें, शीघ्र ही वे परमपद को प्राप्त हों यही कामना है। ●

सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखरजी की तलहटी में...

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

सम्मेदशिखरजी : यहाँ कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में 22 से 29 नवम्बर 2021 तक श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, श्री समयसार महामण्डल विधान एवं नौवें वार्षिक महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

ध्वजारोहणकर्ता श्री सुरेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमारजी बजाज परिवार कोलकाता, शिविर उद्घाटनकर्ता श्री देवेन्द्रकुमारजी चंगाणी मुंबई, विधान उद्घाटनकर्ता श्री राहुल नवीनभाई के. मेहता मुंबई रहे। साथ ही श्री आई.एस. जैन मुंबई ने भगवान पार्श्वनाथ, श्री विजयजी बड़जात्या परिवार इंदौर ने आचार्य कुन्दकुन्द एवं श्री महीपालजी धनपालजी ज्ञायक परिवार बांसवाड़ा ने श्री कानजीस्वामी के चित्रों का अनावरण किया।

सभाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़ के अतिरिक्त श्री बसंतभाई एम. दोषी मुंबई, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री राजकुमारजी अजमेरा, श्री पदमजी पहाड़िया, श्री भरतभाई टिंबडिया, श्री हर्षवर्धनजी जैन, श्री वीनूभाई शाह मुंबई आदि उपस्थित रहे। स्वागत भाषण श्री आलोकजी जैन कानपुर एवं आभार प्रदर्शन श्री अशोकजी जैन जबलपुर ने किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन श्री समयसार महामण्डल विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, बाल ब्र. जतीशचंदजी सनावद, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के व्याख्यानों का लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं अशोकजी जैन उज्जैन ने सम्पन्न कराये।

सर्वोदय अहिंसा अभियान

समाज को मकर सक्रांति पर पतंग ना उड़ाने हेतु प्रेरित करने के लिए यदि आप पोस्टर मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करें :- पण्डित संजय शास्त्री, जयपुर। मो. 9785999100

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

जिनदेशना द्वारा युवा विद्वानों का सम्मान

सम्मेदशिखर : यहाँ दिनांक 25 नवम्बर 2021 को कुन्दकुन्द नगर में आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर समाज के विशिष्ट युवा विद्वानों को सम्मानित किया गया।

साहित्य लेखन के क्षेत्र में **पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी,** तत्त्वप्रचारक के रूप में **पण्डित अनेकांतजी शास्त्री बेलगांव,** जिनधर्म प्रभावक के रूप में **पण्डित मिथुनजी शास्त्री बेलगांव** एवं उदीयमान युवा प्रतिभाशाली विद्वान के रूप में **पण्डित श्री ऋषभजी शास्त्री दिल्ली** को 25-25000 की राशि, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। इस दौरान श्री कुन्दकुन्द–कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के सभी ट्रस्टीगण के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

इन पुरस्कारों के अनुमोदक स्व. श्री उम्मेदमलजी स्व. श्रीमती तेजप्रभाजी बड़जात्या की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कमलजी सुपौत्र श्री साकेतजी बड़जात्या परिवार मुम्बई थे।

इस पहल की सभी साधर्मियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। ज्ञातव्य है कि कोरोना काल में भी जिनदेशना टीम द्वारा हर आयु वर्ग के लिये अनेक सफल कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से सम्पन्न किये जाते रहे हैं।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ दि. 05 दिसम्बर 2021 को 13वाँ वार्षिकोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया।

आमंत्रणकर्ता श्रीमती विमलाबेन चंद्रकान्त डाह्यालाल शाह परिवार अहमदाबाद हस्ते सोनलबेन प्रतीकभाई शाह एवं चैतन्यधाम परिवारजन रहे।

इस अवसर पर श्री प्रवचनसार परमागम विधान, गुरूदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित शैलेशभाई शाह तलोद के प्रवचनोपरान्त वर्तमान चौबीसी की ध्वजा–शिखर शुद्धि, मंदिर की पंच ध्वजा–शिखर शुद्धि एवं ध्वजा परिवर्तन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में श्री अमृतलाल चुनीलालजी महेता, श्री अनिलभाई ताराचंदजी गांधी, राजुभाई वाडीलाल शाह उपस्थित रहे। आभार प्रदर्शन श्री प्रतीकभाई चंद्रकान्त शाह ने एवं संचालन पण्डित सचिन शास्त्री ने किया। इस प्रसंग पर कहान चैतन्य एक्सप्रेस–२०२२ की श्री बाहुबली यात्रा के संघपति हेतु श्री सुभाषभाई सोमचंद कोटडिया वापी के नाम की घोषणा की गई।

आचार्य कुन्दकुन्द व गुरुदेवश्री को स्मरण

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 28 नवम्बर 2021 को कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द पदारोहण दिवस व आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की। अतिथियों में श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री उपस्थित रहे। सत्र संचालन अभिषेक जैन, देवराह एवं मंगलाचरण दिव्यांश जैन, अलवर ने किया।

संयम जैन, दिल्ली ने 'कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द' व सुष्मित जैन, सेमारी ने 'आचार्य कुन्दकुन्द की वाणी के प्रचार–प्रसार में कानजीस्वामी का योगदान' विषय पर विचार व्यक्त किए एवं कविता के माध्यम से समकित जैन, ईसागढ़ ने 'गुरूदेवश्री कानजीस्वामी की जीवन यात्रा' व अमन जैन, खनियांधाना ने छोटे दादा डॉ. भारिल्ल द्वारा गुरूदेवश्री के स्मरण में लिखी गई कविता का वाचन किया। अन्त में आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

आगामी कार्यक्रम...

मंगल आमंत्रण

१. खुरई (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 22 से 24 दिसम्बर 2021 तक श्री 1008 चन्दप्रभ एवं पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याणक एवं मल्लीनाथ भगवान के केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव के प्रसंग पर सकल दिगम्बर जैन समाज एवं श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री 1008 पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

यह महोत्सव बाल ब्र. जतीशचंदजी सनावद के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित रजनीभाई दोषी के निर्देशन सहित पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित सुदीपजी बीना आदि विद्वानों के समागम में सम्पन्न होगा।

२. इंदौर (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम ढ़ाईद्वीप जिनायतन के तत्त्वावधान में श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन 26 दिसम्बर 2021 से 01 जनवरी 2022 तक किया जा रहा है।

वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह कार्यक्रम अब सिर्फ ऑनलाइन माध्यम से ही संचालित किया जाएगा। आपको हुई असुविधा के लिए हमें खेद है। कार्यक्रम का लाइव प्रसारण ढ़ाईद्वीप जिनायतन के यूट्यूब चैनल पर किया जाएगा।

(पृष्ठ 2 का शेष...स्वाध्याय के रसिक)

जब भी मेरा अथवा किसी भी विद्वान का मंगलायतन जाना होता था, तब उनके साथ दिन में व्यक्तिगत स्वाध्याय/तत्त्व चर्चा करना भी उनकी तीव्र रूचि को प्रदर्शित करता था।

वे जब भी जयपुर आते थे, तब मुझे याद करते थे, मिलते थे, मिलने को बुला लेते थे। राजस्थान के राज्यपाल कल्याणसिंह उनके मित्र हुआ करते थे, वे मुझे साथ लेकर कई बार राजभवन गए। उनकी प्रबल भावना थी कि पंडितप्रवर टोडरमलजी के मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रंथ के वे पृष्ठ मिल जाएं, जो संभवत: पंडितजी के साथ जप्त कर लिए गए हों। इसके लिए बहुत प्रयत्न भी किए।

कभी किसी करणानुयोग के सूक्ष्म विषय में अटकाव होने पर वे तुरंत मुझे फोन कर लिया करते थे। जब भी फोन आता था तो करणानुयोग के किसी प्रमाण अथवा अध्यात्म की गहरी चर्चा के लिये ही। मेरे प्रति उनका अत्यधिक घनिष्ठ वात्सल्य था।

जैसा उनका गहरा स्वाध्याय था, वैसा ही उनका जीवन भी बन गया था। लम्बे समय से समाधि में काल व्यतीत करते हुए अत्यंत शांत परिणामों से देह त्याग कर उनकी सद्गति हुई। आज वे हमारे बीच में नहीं है; लेकिन उनकी स्मृति आज भी हमें उनके होने का एहसास करा रही है और हमेशा जीवन पर्यंत कराती रहेगी। दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो – यही मेरी मंगल भावना है। ●

वैराग्य समाचार

१) मैनपुरी निवासी **श्रीमती शीलाजी जलोटा** धर्मपत्नी श्री गणेशप्रसादजी जलोटा का निधन अत्यन्त शान्त परिणामों सहित हुआ। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री दीपकजी जलोटा द्वारा 5100/- रुपये प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद।

२) गोरमी निवासी **श्रीमती सुनीताजी** का दिनांक 07 दिसम्बर 2021 को आकस्मिक देह परिवर्तन हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के स्नातक विद्वान चेतन शास्त्री व वैभव शास्त्री की माताजी हैं।

दिवंगत आत्माओं के शीघ्र अभ्युदय की कामना करते हैं।

प्रकाशन में सहयोग राशि

रतलाम निवासी **पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी** की स्मृति में उनके परिवार द्वारा सत्साहित्य प्रकाशन में कीमत कम करने हेतु 11000 रूपये (मोक्षमार्गप्रकाशक 5500 एवं मोक्षशास्त्र 5500) की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

प्रथम शतक : दोहा शतक

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

देव-शास्त्र-गुरु

(दोहा)

परमशुद्धनय का विषय, परमभावमय होय।
वह शुद्धातम आतमा, जीव तत्त्व है सोय।। ६८।।

वह ज्ञायक परमातमा, उसको कहते शुद्ध।
क्योंकि वह न प्रमत्त है, और न है अप्रमत्त।। ६९।।

दर्शन-ज्ञान-चरित्र के, भेदरूप वह नाहिं।
वह तो एक अभेद है, ज्ञायकभाव कहाँहि।। ७०।।

वह ज्ञायक परमातमा, एकमात्र श्रद्धेय।
परम ज्ञेय भी है वही, वही ध्यान का ध्येय।। ७१।।

शेष सभी द्रव ज्ञेय हैं, हेय हैं आस्रव-बंध।
पुण्य-पाप भी हेय हैं, शेष सभी आदेय[1]।। ७२।।

एकदेश आदेय हैं, संवर-निर्जर तत्त्व।
पर पूरण आदेय है, मोक्ष तत्त्व सुन भव्य।। ७३।।

सब से दृष्टि हटाकर, इक निज आतम माँहि।
अपनापन कर भव्यजन, रमो जमो उस माँहिं।। ७४।।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान अर, चरण आतमा माँहि।
इस पर चलकर भव्यजन, जावें मुक्ति माँहि।। ७५।।

यह ही मुक्तिमार्ग है, इससे मुक्ति होय।
और सभी व्यवहार हैं, उनसे मुक्ति न होय।। ७६।।

अत: एव हे भव्यजन ! एक आतमा माँहि।
अपनापन धारण करो, अन्य किसी में नाहिं।। ७७।।

अपने में अपनत्व तो, होता है सम्यक्त्व।
अर पर में अपनत्व ही, होता है मिथ्यात्व।। ७८।।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान अर, अर सम्यक्चारित्र।
तीनों में सम्यक्पना, तीनों हैं सम्यक्त्व।। ७९।।

मिथ्यादर्शन-ज्ञान अर, अर मिथ्याचारित्र।
तीनों में मिथ्यापना, तीनों हैं मिथ्यात्व।। ८०।।

दर्शन का सम्यक्पना, जिसप्रकार सम्यक्त्व।
वैसे ही है ज्ञान का, सम्यक्पन सम्यक्त्व।। ८१।।

इसीतरह चारित्र का, सम्यक्पन सम्यक्त्व।
तीनों के सम्यक्पने को कहते सम्यक्त्व।। ८२।।

तीनों के सम्यक्त्व को, कहते सम्यक्भाव।
तीनों के मिथ्यात्व को, कहते मिथ्याभाव।। ८३।।

इस बारे में आपको, यदी जानना होय।
मोक्षमार्गपरकाश[1] में देखो भविजन लोय !।। ८४।।

लगभग हर अधिकार का, देखो तुम आरम्भ।
यही भाव मिल जायेगा, करो उन्हें प्रारम्भ।। ८५।।

अपने और पराये की, करना यदि पहिचान।
करना होगा आपको, स्व-पर भेदविज्ञान।। ८६।।

स्व-पर भेदविज्ञान बिन, आतम की पहिचान।
करना सम्भव है नहीं, करो भेदविज्ञान।। ८७।।

स्व-पर भेदविज्ञान ही, जिनदर्शन का मूल।
स्व-पर भेद जाने बिना, मिटे न भव का शूल।। ८८।।

भेदज्ञान के बिना जो, अबतक हैं मझधार।
भेदज्ञान से ही सभी, भवि होंगे भव-पार।। ८९।।

भवसागर को पार कर, पाना है भव-अन्त।
भेदज्ञान की भावना, आवश्यक अत्यन्त।। ९०।।

सिद्ध हुये हैं आज तक, अर भविष्य में होंय।
और हो रहे हैं अभी, भेदज्ञान से होंय।। ९१।।

यदि जाना है मोक्ष तो, करो भेदविज्ञान।
मुक्ति होगी ही नहीं, बिना भेदविज्ञान।। ९२।।

अपने और पराये की, यदि न हो पहिचान।
फिर कैसे होगा कहो, हमसे अपना ध्यान।। ९३।।

यदि करना है भव्यजन ! तुमको अपना ध्यान।
तो सबसे पहले करो, तुम अपनी पहिचान।। ९४।।

अपने को पहिचान कर, अपने में अपनत्व।
अपने में रुचिपूर्वक, अपने में एकत्व।। ९५।।

सम्यक्–मिथ्याभाव की, हो सम्यक् पहिचान।
तब ही आतमतत्त्व का, होगा सम्यग्ज्ञान।। ९६।।

आतम अर देहादि में, ना भासे भिन्नत्व।
आतम का देहादि से, ना छूटे अपनत्व।। ९७।।

जब तक आतमराम में, न आवे अपनत्व।
तब तक दिल्ली दूर है, ना होवे सम्यक्त्व।। ९८।।

अपनी दिल्ली मोक्ष है, यदि जाना हो मोक्ष।
अपने को अपनाइये, अपने में ही मोक्ष।। ९९।।

पहला आतम तत्त्व है अर अन्तिम है मोक्ष।
और अनन्तानन्दमय आतम ही है मोक्ष।। १००।।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ २. उपादेय

(पृष्ठ 1 का शेष...पंचकल्याणक)

दिल्ली के सत्येन्द्रजी शर्मा द्वारा "सुदर्शन सेठ का वैराग्य" विषयक नाट्य प्रस्तुति की गई। जन्म कल्याणक के दिन पांडुक शिला पर बालक नेमिकुमार के जन्माभिषेक के उपरान्त सौधर्म इन्द्र द्वारा तांडव नृत्य एवं रात्रि में पालना झूलन हुआ। दीक्षा कल्याणक के दिन नेमिकुँवर की बारात और वैराग्य का प्रसंग, देवों मानवों की चर्चा विशेष आकर्षक रही। ज्ञान कल्याण के दिन मुनिराज नेमिनाथ के आहारदान की विधि, केवलज्ञान की प्राप्ति, समवशरण की रचना एवं दिव्यध्वनि खिरने के मनोहर दृश्य देखने को मिले। मोक्ष कल्याणक के दिन गिरनार पर्वत की रचना कर भगवान के निर्वाण महोत्सव का दृश्य दिखाया गया। पंचकल्याणक में प्रतिदिन शोभायात्रा तथा इंद्रसभा और राजसभा का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर आयोजित विविध विधान पण्डित संजयजी कोटा, पण्डित मनीषजी पिडावा, पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं पण्डित सुबोधजी ग्वालियर ने सम्पन्न कराये।

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

12 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 112 – ज्ञायक भाव की शुद्धता का वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तर – पर से भिन्न, प्रमत्त अप्रमत्त पर्यायों से भिन्न एवं गुणभेद से भी भिन्न ज्ञायक भाव अनुभूति में आता हुआ शुद्ध कहलाता है।

प्रश्न 113 – दृष्टि का विषय क्या है?

उत्तर – पर से भिन्न, प्रमत्त–अप्रमत्त पर्यायों से भिन्न एवं गुणभेद से भी भिन्न ज्ञायक भाव ही दृष्टि का विषय है।

प्रश्न 114 – ध्यान का ध्येय क्या है?

उत्तर – पर से भिन्न, प्रमत्त–अप्रमत्त पर्यायों से भिन्न एवं गुणभेद से भी भिन्न ज्ञायक भाव ही ध्यान का ध्येय है।

प्रश्न 115 – परमशुद्ध निश्चयनय का विषयभूत परम पदार्थ क्या है?

उत्तर – शुद्ध ज्ञायक भाव

प्रश्न 116 – परमभावग्राही द्रव्यार्थिक नय का विषयभूत परमपारिणामिक भाव कौनसा है?

उत्तर – शुद्ध ज्ञायक भाव

प्रश्न 117 – आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चारित्र – ये तीन भाव किस नय से कहे जाते हैं?

उत्तर – व्यवहार नय से।

प्रश्न 118 – ज्ञानादि गुणों के अखण्ड पिण्ड आत्मा में ज्ञान–दर्शन–चारित्र गुण नहीं हैं – यह क्यों कहा गया है?

उत्तर – निश्चय नय से अनंत पर्यायों को एक द्रव्य पी गया होने से, जो एक है, अभेद है –ऐसे कुछ मिले हुए आस्वाद वाले एक स्वभावी तत्त्व का अनुभव करने वाले को 'ज्ञान–दर्शन–चारित्र' गुण नहीं हैं – ऐसा कहा गया है। अर्थात् अनुभूति के विषयभूत ज्ञायक भाव में ज्ञान–दर्शन–चारित्र रूप गुणभेद का निषेध किया गया है; क्योंकि गुणों के भेदों में जाने से विकल्पों की उत्पत्ति होती है।

प्रश्न 119 – गुणभेद भी तो वस्तु का स्वभाव है, पर्यायें भी द्रव्य का अंश हैं, द्रव्य के ही भेद हैं अवस्तु (परवस्तु) नहीं, तब फिर इन्हें व्यवहार कहकर भेद को गौण क्यों किया गया है?

उत्तर – भेद को गौण करने पर अभेद भलीभांति प्रतिभासित होता है, इसीलिए यहाँ भेदरूप व्यवहार को गौण किया गया है अर्थात् भेददृष्टि में निर्विकल्प दशा नहीं होती, सम्यग्दर्शन नहीं होता, अपितु राग ही उत्पन्न होता है – इसीलिए पर्याय दृष्टि छुड़ाकर द्रव्यदृष्टि कराने का प्रयोजन होने से अभेद को मुख्य करके उपदेश दिया है। **(क्रमशः)**

17 दिसम्बर 2021, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

श्री पवनजी जैन अलीगढ़ की स्मृति में विभिन्न स्थानों पर आयोजित श्रद्धांजलि सभाएं

1) तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ दिनांक 05 दिसम्बर 2021 को आपकी स्मृति में भव्य श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई, जिसके अंतर्गत देश-विदेश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सभा में उपस्थित होकर आपके प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। सर्वप्रथम पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री पंडित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल के हृदयोद्गार के उपरांत श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, श्री अजितजी जैन बड़ोदरा, श्री अतुलजी गुप्ता, श्री अजयजी राजकोट/अलीगढ़, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर/कोटा, श्री महेन्द्रजी गुप्ता, पण्डित अनुभवजी करेली, पण्डित अगमजी उदयपुर, श्री ज्ञानेंद्रजी अलीगढ़, श्रीमति बीनाजी एवं उनके सुपुत्र श्री स्वप्निलजी जैन ने अपने उद्गार व्यक्त किए। इस प्रसंग पर सभा में श्री हितेनभाई सेठ मुंबई, श्री अक्षयभाई दोषी, पंडित प्रकाशजी मैनपुरी, प्रो. सुदीपजी जैन दिल्ली, प्रो. पी.के. जैन रुड़की, पंडित राकेशजी लोनी, ब्र. सुकुमालजी झांझरी, पंडित अजितजी अलवर, पंडित अरुणजी बण्ड, पंडित अशोकजी लुहाड़िया, पंडित सुधीरजी शास्त्री, पंडित ऋषभजी उस्मानपुर, डॉ. योगेशजी अलीगंज, श्री चिन्मयजी कोटा, पंडित सचिन्द्रजी शास्त्री आदि उपस्थित रहे। सत्र का संचालन पंडित विवेकजी जैन छिंदवाड़ा ने किया। ज्ञातव्य है कि अपने देह वियोग के पूर्व ही उन्होंने लगभग 43 संस्थाओं में 21 लाख रुपये की राशि दान देने की भावना व्यक्त कर दी थी, जिसके अंतर्गत पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्रचार-प्रसार हेतु 75000 रुपये की राशि प्रदान की गई।

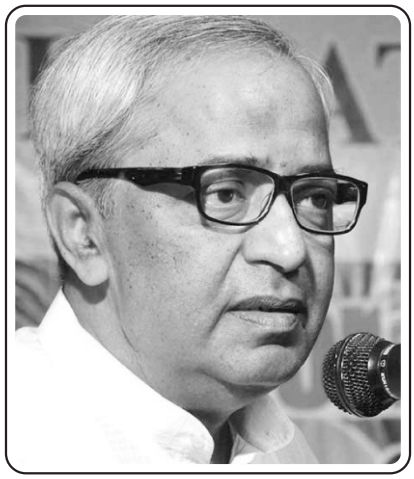

2) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर में दिनांक 04 दिसम्बर 2021 को प्रात: शोक सभा का आयोजन किया गया। वैराग्य भावना के पाठ उपरांत श्री पवनजी जैन के वीडियो प्रवचन का प्रसारण किया गया। सभा में ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री पंडित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं पंडित अरुणजी शास्त्री बण्ड ने श्री पवनजी के जीवन प्रसंगों का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित की। मंगलायतन विद्यालय के भूतपूर्व छात्र समकित जैन ईसागढ़ एवं संदेश जैन दिल्ली ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस प्रसंग पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर ने भी अपने ऑनलाइन प्रवचनोपरांत हजारों श्रोताओं के मध्य श्रद्धासुमन अर्पित किए।

3) श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट नागपुर द्वारा दिनांक 08 दिसंबर 2021 को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्री जयकुमारजी देवड़िया की अध्यक्षता में डॉ. राकेशजी शास्त्री, पंडित विपिनजी शास्त्री, विदूषी प्रतीतिजी मोदी, श्री नरेशजी जैन आदि वक्ताओं ने श्री पवनजी द्वारा किए गये अपूर्व कार्यों का स्मरण करते हुए उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन समर्पित किए। तथा बताया कि वे श्री महावीर विद्या निकेतन के परम संरक्षक एवं तीर्थधाम ज्ञानायतन नागपुर के प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनका तत्त्वज्ञान के प्रति अद्भुत और अलौकिक समर्पण सदैव हमें प्रेरणा देता रहेगा। आप तीर्थधाम मंगलायतन के भी अविस्मरणीय शिल्पकार थे।

4) मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका द्वारा दिनांक 04 एवं 05 दिसम्बर को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में अमेरिका, कनाड़ा, अफ्रीका, सिंगापुर, इण्डिया, ऑस्ट्रेलिया, लन्दन आदि स्थानों से अनेक साधर्मियों ने अपने उद्गार व्यक्त किए। सभा का संचालन श्री किरीटभाई गोसलिया ने किया। सभा का संयोजन एवं व्यवस्थाएँ श्री रजनीभाई गोसलिया, श्री प्रग्नेशभाई गाँधी मयामी, भानुबेन एवं लताबेन द्वारा सम्भाली गई।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2021

प्रति,